ISSN-2582-6557 RNI-MP/BIL/2020/78687
JANMAT POWER NATIONAL RESEARCH JOURNAL
A MONTHLY RESEARCH JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY May-2023
NATIONAL PEER- REFEREED,REVIEW JOURNAL, INDEXING &IMPACT FACTOR-5.2

विशिष्ट बालक शिक्षा: वर्तमान परिस्थितियों में एक शोध परक अध्ययन

विष्णु कुमार शर्मा
प्रवक्ता, वीणा मैमोरियल कॉलेज ऑफ एजूकेशन, पदेवा करौली (राज.)
विनोद कुमार शर्मा
निदेशक, शारीरिक शिक्षा, प्रवक्ता, वीणा मैमोरियल कॉलेज ऑफ एजूकेशन, पदेवा करौली (राज.)

सारांश-मानव सभ्यता के विकास के साथ-साथ हमने प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति की है। शिक्षा का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं रहा है। कुछ समय पूर्व तक हम किसी भी प्रकार से असमर्थ बालकों की शिक्षा पर ध्यान नहीं देते थे, लेकिन मनोविज्ञान ने शिक्षा के क्षेत्र को एक नई राह दी। आज हम किसी भी क्षेत्र में नजर डालते हैं तो हमें प्रत्येक क्षेत्र में मनोविज्ञान का योगदान नजर आता है। शिक्षा के प्रचार-प्रसार से पहले शारीरिक या मानसिक दोष वाले बालक को बुरी नजर से देखा जाता था। तथा इसे पूर्व जन्म के कर्मों का फल समझा जाता था। लेकिन धीरे-धीरे लोगों की सोच में परिवर्तन आने लगा और हमने उन बालकों को भी समाज का अंग मानना शुरू कर दिया।

आज सभी प्रकार के बच्चों को, चाहे वे शारीरिक विकलांग, अधिगम असमर्थया भावनात्मक रूप से ग्रस्त हैं, को शिक्षा ग्रहण करने का समान अधिकार है। सरकार के साथ-साथ समाज के लोग भी इनकी शिक्षा को लेकर चिन्तित हैं। प्रत्येक स्तर पर इनकी शिक्षा का प्रबन्ध करने की कोशिश जारी है ताकि इस प्रकार के बच्चे भी शिक्षा ग्रहण कर सकें। वे भी समाज का अंग बन सकें। नई शिक्षा नीति 2020 में इस प्रकार के बालकों की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया गया है ताकि बिना किसी भेदभाव के वे भी अपने सामर्थ्य के अनुसार शिक्षा ग्रहण कर सकें।

प्रकृति के नियम के अनुसार कोई भी दो प्राणी एक जैसे नहीं होते। दो प्राणियों की शक्ल चाहे आपस में एक जैसी लगती हो लेकिन वास्तव में वह एक जैसी नहीं होती। इसी प्रकार से प्रत्येक बच्चा दूसरे के समान लगता है लेकिन वह दूसरे के समान नहीं होता। प्रत्येक बालक में अपनी कुछ विशेषताएँ होती हैं जो उसे दूसरे बालकों से भिन्न करती हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में भी सभी बालक एक समान नहीं होते, कुछ बालक अधिक बुद्धिमान हैं तो कुछ बिल्कुल ही पिछड़े हुए है। कुछ बालक शारीरिक दृष्टि से पूर्णतया स्वस्थ हैं तो कुछ

अपंग हैं, कुछ बालकों को सुनने की समस्या है तो कुछ अन्धे हैं। कुछ बालक अधिक बुद्धिमान होने के कारण अपने आपको समाज में स्थापित नहीं कर पाते तो कुछ समाज में अपने आपको स्थापित कर लेते हैं। सभी बालकों में कुछ-न-कुछ अपनी विशेषताएँ होती हैं।

विशिष्ट बालक से अभिप्राय-प्रत्येक विद्यालय में सभी प्रकार के बालक समान नहीं होते हैं। कुछ ऐसे बालक भी होते हैं जिनकी अपनी कुछ विशेषताएँ होती हैं। ये विशेषताएँ शारीरिक, बौद्धिक, संवेगात्मक तथा सामाजिक हो सकती हैं। इस प्रकार जो बालक सामान्य बालकों से अलग विशेषताएँ रखते हैं उन्हें 'विशिष्ट बालक' कहा जाता है। हेक ने लिखा है कि **"विशिष्ट बालक वे हैं जो किसी एक या अनेक गुणों की दृष्टि से सामान्य बालकों से पर्याप्त मात्रा में भिन्न होते हैं।"** ऐसे बालकों की शिक्षा के लिए विशेष प्रबन्ध करना पड़ता है।

परिभाषाएँ (Definitions)

क्रो एण्ड क्रो, 1948 के अनुसार, "विशिष्ट प्रकार या विशिष्ट शब्द किसी एक ऐसे लक्षण या उस लक्षण को रखने वाले व्यक्ति पर लागू किया जाता है जबकि लक्षण को सामान्य रूप में प्रत्यय की सीमा इतनी अधिक होती है कि उसके कारण व्यक्ति अपने साथियों का विशिष्ट ध्यान प्राप्त करता है और इससे उसके व्यवहार की अनुक्रियाएँ प्रभावित होती हैं।"

ऐसे बालकों के लिए शिक्षा की व्यवस्था विशेष रूप से करने की आवश्यकता पड़ती है । अध्यापक को उनकी पहचान, समायोजन तथा शिक्षा की ओर विशेष ध्यान देना पड़ता है। विशिष्ट बालक सामान्य बालकों से पर्याप्त रूप से भिन्न होते हैं। ऐसे बालक प्रायः सभी विद्यालयों में पर्याप्त मात्रा में मिल जाते हैं। उनके लिए विशेष कक्षाओं का आयोजन करना पड़ता है।

सैमुयल-ए. (Samual A-Kirk) (1972) के अनुसार, "विशिष्ट बालक वह बालक है जो सामान्य बालकों से शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक व संवेगात्मक विशेषताओं से भिन्न होता है। उसके गुणों को अधिकतम सीमा तक विकसित करने के लिए विशेष कक्षा का प्रबन्ध करना पड़ता है।"

डब्ल्यू. एम. (W.M. Cruishank) (1974) के अनुसार, "एक विशिष्ट बालक वह है जो शारीरिक, बुद्धिमानी और समाज के आधार पर सामान्य बालक की अपेक्षा गुणों में अधिक विकसित हो तथा सामान्य शिक्षा कक्ष में शिक्षण के कार्यक्रम के मध्य उसे विशिष्ट प्रकार के

व्यवहार की आवश्यकता हो।‘‘

हेबेट तथा फारनेस (HJewelt and Forness) (1984) के अनुसार, “विशिष्ट ऐसा व्यक्ति होता है जिसकी शारीरिक, मानसिक, बुद्धि, इंद्रियाँ,, मांसपेशियों की क्षमताएँ अनोखी हो अर्थात् सामान्यतः ऐसे गुण दुर्लभ हों। ऐसी अनोखी दुर्लभ क्षमताएँ उसकी प्रवृत्ति तथा कार्यों के स्तर में भी हो सकती है। इस प्रकार के बालक ‘प्रतिभाशाली बालक‘ के रूप में परिभाषित होते हैं। ऐसे बालक बड़ी आसानी से अन्य बालकों के बीच में पहचाने जा सकते हैं।‘‘

टेफर्ड और सौरे (Telfard and Sauerey) के अनुसार, “विशिष्ट बालक शब्दावली का प्रयोग उन बालकों के लिए करते हैं जो सामान्य बालकों से शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक या सामाजिक विशेषताओं में इतने अधिक भिन्न होते हैं कि उन्हें अपनी क्षमता के अधिकतम विकास हेतु विशेष सामाजिक और शैक्षिक सेवाओं की आवश्यकता पड़ती है।‘‘

श्वार्टज (Schwartz) के अनुसार, ‘‘जब हम किसी को ‘विशिष्ट‘ कहकर वर्णित करते हैं, हम व्यक्ति को ‘औसत‘ या ‘सामान्य‘ लोगों, जिन्हें हम एक या इससे अधिक लक्षणों के सम्बन्ध में जानते हैं, से अलग रखते हैं।‘‘

ई. वालेन्स बालिन (E- Wallance Wllin) के अनुसार, ‘‘प्रारम्भिक स्कूल के 1000 बालकों में से लगभग 500 बालकों में कुछ विशिष्टताएँ पाई जाती हैं। इसमें भी लगभग 50 अर्थात् 10ः बालक शारीरिक या मानसिक हीनता से ग्रस्त दिखलाई पड़ेंगे। अन्य बालक मानसिक, संवेगात्मक, सामाजिक या व्यक्तित्व सम्बन्धी विशिष्ट समस्याओं के कारण विशिष्ट होंगे। ये विशिष्ट बालक इसी प्रकार के सामाजिक, आर्थिक पर्यावरण से आते हैं। इनके समायोजन की विशिष्ट समस्याएँ होती हैं। अध्यापक को उनका विशिष्ट ढंग से समाधान करना पड़ता है।‘‘

प्रत्येक विद्यालय में जहाँ सामान्य बालक होते हैं, वहाँ बहुत-से शिक्षार्थी ऐसे भी होते हैं जो किसी न किसी रूप में अन्य शिक्षार्थियों से विशिष्ट होते हैं। यह विशिष्टता शारीरिक अथवा मानसिक किसी भी प्रकार की हो सकती है। उदाहरण के लिए कुछ विद्यार्थी विशिष्ट रूप से लम्बे या छोटे, दुर्बल या बलवान् हो सकते हैं। यह विशिष्टता सामान्य से आगे की ओर भी मिल सकती है और पिछड़े हुए में भी। ये दोनों प्रकार के बालक विशिष्ट होते हैं। जो बालक शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक तथा सामाजिक रूप से सामान्य बालकों से या तो आगे होते हैं

या पीछे, ऐसे बालकों को **'विशिष्ट बालक'** कहा जाता है।

विशिष्ट बालक अपनी आयु के सामान्य बालकों से कुछ अपनी खास विशेषताओं या खास कमियों के कारण क्रमशः या तो अधिक प्रतिभाशाली होते हैं या मंदबुद्धि वाले है। क्रो एवं क्रो ने विशिष्ट शब्द को स्पष्ट करते हुए कहा कि ''विशिष्ट' शब्द ऐसे गुण के लिए प्रयुक्त किया जाता है जिससे वह विशिष्ट व्यक्ति सामान्य व्यक्ति से भिन्न होता है। उसमें यह विशिष्टता इतनी महत्वपूर्ण होती है कि उसके लिए वह अपने साथियों से विशेष ध्यानकी मांग करती है और उससे उसकी व्यवहार अनुक्रियाएँ तथा क्रियाएँ प्रभावित होती हैं।"

अतः कहा जा सकता है, कि कक्षा में विभिन्न प्रकार की योग्यताओं वाले बच्चों की विभिन्न आवश्यकताएँ होती हैं। अतः जब ये भिन्नताएँ अपनी चरम सीमा पर पहुँच जाती हैं तो उन्हें विशिष्ट बालक की संज्ञा दी जाती है। दूसरे शब्दों में, विशिष्ट बालक शब्द न केवल मानसिक रूप से, संवेगात्मक शारीरिक या सामाजिक रूप से विकलांग बालकों के लिए ही प्रयोग होता है, बल्कि उन बालकों के लिए भी होता है जो बौद्धिक दृष्टि से विशिष्ट होते हैं।

विशिष्ट बालकों या विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए विशेष शिक्षा की आवश्यकता होती है। विशेष शिक्षा विशिष्ट बालकों के विभिन्न वर्गों के लिए विशेष रूप से नियोजित होती है। इस प्रकार की शिक्षा सामान्यतः अलग कक्षाओं या अलग स्कूलों में दी जाती है। इन स्कूलों के अध्यापक भी विशेष रूप से प्रशिक्षित होते हैं।

विशिष्ट आवश्यकता वाले बालकों की विशेषताएं

1-विशिष्ट बालक वे हैं, जो शारीरिक, संवेगात्मक या सामाजिक विशेषताओं में सामान्य बालकों से इतने पृथक् हैं कि उनकी क्षमताओं के अधिकतम विकास के लिए विशिष्ट शिक्षा सेवाओं की आवश्यकता होती है।

2-विशिष्ट बालक वे हैं, जो सामान्य बौद्धिक, शारीरिक, सामाजिक तथा संवेगात्मक वृद्धि तथा विकास में इतने भिन्न हैं कि वे नियमित तथा सामान्य विद्यालय के शैक्षणिक कार्यों से अधिकतम लाभ नहीं उठा सकते हैं तथा जिनके लिए विशिष्ट कक्षाओं एवं अतिरिक्त शिक्षण व सेवाओं की आवश्यकता होती है।

3-एक विशिष्ट बालक वह है, जो कि शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक एवं सामाजिक

विशेषताओं में किसी सामान्य बालक से उस सीमा तक विचलित होता है जब वह अपनी क्षमताओं के अधिकतम विकास हेतु सहायता, निर्देशन, विद्यालयी कार्यक्रमों में परिमार्जन तथा विशिष्ट शैक्षिक सेवाओं की आवश्यकता रखता है।

अक्सर विशिष्ट बालक एक ऐसा बालक होता है। जिसके कुछ ऐसे लक्षण होते हैं। जिनके कारण दूसरे व्यक्ति उनकी ओर विशेष रूप से आकर्षित होते हैं। विशिष्ट बालक अपने आपको सामान्य बालकों से अलग रखते हैं। कक्षा में वे सबके साथ मिलकर नहीं रह पाते। वातावरण के साथ भी उनका समायोजन करना कठिन होता है। वे समाज में भी अपना अलग स्थान बनाए रखना चाहते हैं। इन्हें प्रायः असाधारण बच्चों के नाम से भी पुकारा जाता है, क्योंकि ये आम बच्चों की श्रेणी में नहीं रखे जा सकते। इन बच्चों की देख-रेख करना तथा इनकी शिक्षा का विशिष्ट प्रावधान करना शैक्षिक अवसरों की समानता, सामाजिक न्याय एवं राष्ट्रीय विकास की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

विद्वानों के विचारों को समन्वित करके विशिष्ट बालक के स्वरूप की व्याख्या की जा रही है" एक ऐसा बालक जोकि शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, शैक्षिक, सांवेगिक एवं व्यावहारिक विशेषताओं के कारण किसी सामान्य या औसत बालक से उस सीमा तक स्पष्ट रूप से विचलित या भिन्न होता है जहाँ कि उसे अपनी योग्यताओं, क्षमताओं एवं शक्तियों को समुचित रूप से विकसित करने की आवश्यकता होती है, 'विशिष्ट बालक' कहा जाता है। इस श्रेणी में शारीरिक रूप से अक्षम, प्रतिभाशाली, सृजनात्मक, मन्दबुद्धि, शैक्षिक रूप से श्रेष्ठ एवं पिछड़े, बाल अपराधी, असमायोजित, समस्याग्रस्त, सांवेगिक अस्थिरतायुक्त आदि प्रकार के बालक सम्मिलित हैं।"

विशिष्टता का क्षेत्र सार्वभौमिक है। यह किसी भी वर्ग, जाति, धर्म, सम्प्रदाय, राष्ट्र आदि के व्यक्तियों में पाई जा सकती है। कभी यह विशिष्टता वंशानुगत, कभी वातावरण तथा कभी दोनों ही के संयोजन का प्रतिफल होती है। इतिहास में विभिन्न विशिष्टताओं वाले व्यक्तियों के उदाहरण मिलते हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति कैनेडी की बहन मन्दबुद्धि थी। प्रसिद्ध लेखक एवं ट्रेवलर हैलन कीलर चक्षुहीन एवं श्रवण विकलांग थी। महान् कवि सूरदास जन्मान्ध थे।

प्रसिद्ध आइन्स्टीन का भाषा विकास काफी विलम्ब से हुआ था। अमेरिकी राष्ट्रपति रूसवेल्ट स्वयं पोलियो के शिकार थे। यह सभी उदाहरण सिद्ध करते हैं कि विभिन्न निर्योग्यताओं की पूर्ति सम्भव है तथा कोई भी अक्षम बालक उचित शिक्षण एवं प्रशिक्षण के द्वारा सामान्य

बालकों की तरह स्वयं के लिए, राष्ट्र एवं समाज के लिए उपयोगी बनाया जा सकता है। अतः आज संसार के लगभग समस्त विकसित एवं विकासशील देशों में विशिष्ट बालकों के प्रति लोगों के दृष्टिकोण में परिवर्तन हुआ है। इन विशिष्ट बालकों के लिए विशेष विद्यालय खोले गए हैं, जहाँ उन्हें उनकी आवश्यकतानुसार शिक्षण एवं प्रशिक्षण दिया जाता है।

विशेष आवश्यकताओं वाले बालकों के प्रकार- इस प्रकार के बालक भी कई प्रकार के होते हैं। हर प्रकार के बालक की अपनी-अपनी विशेषताएँ होती हैं। ये बालक निम्न प्रकार के हो सकते हैं-

(1) शारीरिक रूप से विकलांग बालक . इस वर्ग के अन्तर्गत निम्नलिखित बालक आते हैं-

- 1-अपंग बालक
- 2-दृष्टिदोष युक्त या सम्पूर्ण और आंशिक रूप से अन्धे
- 3-श्रवण-दोषयुक्त बालक या पूर्ण और अपूर्ण बहरे
- 4-दोष वाले बच्चे या दोषपूर्ण वाले बालक
- 5-निर्बल

(2) मानसिक रूप से विकलांग बालक-

- 1-इस वर्ग में मानसिक रूप से पिछड़े बालक शामिल हैं।
- 2-इनमें सामान्य से कम बुद्धि होती है।
- 3-प्रतिभावान बालक
- 4-सामाजिक रूप से विकलांग बालक
- 5-बहु-विध विकलांग बालक .एकविशिष्ट बालक कई बार एक से अधिक पक्षों में विकलांग होता है।

मुख्य रूप से विशिष्ट बच्चों को निम्न श्रेणियों में बाँटा जा सकता है-

- 1.मानसिक रूप से पिछड़े हुए
- 2.प्रतिभाशाली बच्चे
- 3.पिछड़े हुए बचे
- 4.समस्यात्मक बच्चे

- 5.बाल अपराधी बच्चे
- 6.सृजनशील बच्चे

अध्यापक को इन्हें शैक्षिक तथा व्यावसायिक समायोजन में सहायता करनी चाहिए। ऐसे बच्चों को केवल सामान्य शिक्षा देना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उन्हें इस योग्य बनाने में सहायता करनी चाहिए। जिससे वे भावी जीवन में कोई व्यवसाय अपनाकर आजीविका कमा सकें।

विशिष्ट बच्चों की पहचान. विशिष्ट बच्चे अपनी विशेषताओं के कारण ही सामान्य बच्चों से भिन्न होते हैं। इनकी पहचान विभिन्न तरीकों से होती है। इनकी अपनी विशेषताएँ होती हैं जिनके आधार पर इनकी पहचान की जा सकती है।

मानसिक रूप से पिछड़े बच्चों की पहचान मानसिक रूप से पिछड़ा या मंदबुद्धि बालक मूढ़ (Dull) होता है। इसलिए उसमें सोचने, समझने और विचार करने की शक्ति कम होती है। मूर्ख अल्प बुद्धि और जड़-बुद्धि को इस श्रेणी में रखते हैं। इनकी पहचान के लिए निम्नलिखित विशेषताओं अथवा चिह्नों को आधार माना जाता है-

क्रो एण्ड क्रो- जिन बालकों की बुद्धिलब्धि 45 या 50 से 65 या 70 तक होती है, उन्हें 'मूर्ख' कहते हैं।

1-मानसिक रूप से पिछड़े बच्चे वे होते हैं जो सामान्य व्यक्ति की भाँति विकसित नहीं होते।

2-इनमें मौलिकता का अभाव होता है।

3-ये सब कार्यों के लिए अधिकतर दूसरों पर निर्भर करते हैं।

4-धीमी गति से सीखते हैं और जल्दी ही भुला देते हैं।

5-घर, स्कूल और समाज में भी ये अपने-आपको समायोजित नहीं कर पाते।

6-इनकी रुचियाँ बहुत सीमित और थोड़ी होती हैं।

7-इन बच्चों में कई बार जन्मजात शारीरिक दोष भी पाए जाते हैं जिनका उपचार करना कठिन होता है।

JPMRJ
JANMAT POWER
MONTHLY RESEARCH JOURNAL

8-इनमें संवेगात्मक समायोजन बहुत कम होता है। इनकी पहचान बुद्धि परीक्षण, उपलब्धि परीक्षण तथा उनकी विशेषताओं पर की जा सकती है।

सामान्य रूप से पिछड़े हुए बालक

पिछड़े बच्चों से अभिप्राय उन बच्चों से है, जो सामान्य बच्चों से मानसिक रूप से पिछड़े होते हैं। इनकी बुद्धिलब्धि सामान्य से कम होती है। इनकी पहचान सामूहिक परीक्षण, व्यक्तिगत बुद्धि परीक्षण तथा उपलब्धि परीक्षणों से की जा सकती है। स्कूल के संचयी लेखों के द्वारा भी पिछड़े बच्चों की गतिविधियाँ तथा उपलब्धियाँ जानी जा सकती हैं। माता-पिता की रिपोर्ट के द्वारा भी इनके बारे में जानकारी प्राप्त की जा सकती है। इन बच्चों के सीखने की गति धीमी होती है। इनकी रूचियाँ सीमित होती हैं। ये बच्चे किसी काम को बताने पर ही करते हैं। ये अपनी बुद्धि और पहल के आधार पर स्वयं कार्य करने में असमर्थ होते हैं और उनमें मौलिकता का भी अभाव होता है। पिछड़े बालक का मंदबुद्धि होना आवश्यक नहीं है। यदि प्रतिभाशाली बालक की शैक्षिक योग्यता अपनी आयु के छात्रों से कम है, तो उसे भी पिछड़ा हुआ बालक कहा जाता है।

मनोवैज्ञानिकों के अनुसार जिस बच्चे की बुद्धिलब्धि **(I.Q.)** 70 और 90 के बीच में हो तो उसे पिछड़ा हुआ बालक कहा जा सकता है। यह बालक धीरे-धीरे सीखने वाला होता है और इसकी शैक्षणिक लब्धि **(E.Q.)** 85 से कम होती है। जोक कोयम और रॉबर्ट डैहन के मतानुसार पिछड़े बच्चों को निम्नलिखित लक्षणों से पहचाना जा सकता है-

1-ये बच्चे अमूर्त चिन्तन या प्रतीकों का प्रयोग करने में असमर्थ होते हैं।

2-घर के कामों को करने और समझने में अन्य बालकों की तुलना में असमर्थ होतेहैं।

3-बुद्धि परिणामों की सहायता से इन्हें पहचाना जा सकता है।

4-सामाजिक, शैक्षिक, संवेगात्मक एवं शारीरिक क्षेत्रों में पिछड़ापन भी पिछड़े बालकों की पहचान में सहायक होता है। ऐसे बालक सामान्य बालकों से इन क्षेत्रों में पिछड़े होते हैं।

5-इन बच्चों का निष्पादन सामान्य बच्चों से कम होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः

- ढैढियाल एवं पाठक, ''शैक्षिक अनुसंधान'', राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, 2020.
- एफ.पी., रॉबिनसन'' प्रिंसिपल एण्ड प्रोसिजर्स इन स्टूडेन्ट्स काउंसलिंग'', 2021
- गुप्ता डॉ एस.पी., ''शिक्षा व मनोविज्ञान में आधुनिक मापन व मूल्यांकन'', शरद पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 2021
- गुप्ता, प्रिया 2019 ''सहभागितापूर्ण अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम की क्षेत्र तथा स्वविकास में प्रासंगिकता पर अध्ययन'' 2020
- गैरेट ई.हेनरी, ''शिक्षा मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग'', कल्याणी पब्लिशर्स, आगरा, 2022
- गोस्वामी, वंदना, सुराणा अजय 2019 ''सहभागितापूर्ण अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम द्वारा शिक्षार्थी-अध्यापकों का वृत्तिक विकास का अध्ययन।''
- शर्मा डॉ आर.ए. 2022 ''शिक्षा मनोविज्ञान के मूल तत्व'', आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।

JPMRJ
JANMAT POWER
MONTHLY RESEARCH JOURNAL